11

कम्पनी शैली
Company School

11.0 भूमिका

अंग्रेज व्यापारी 16 वीं शताब्दी में भारत आए। अंग्रेजों के अतिरिक्त और कई यूरोपीय व्यापारी भी भारत आए थे पर अंग्रेज धीरे–धीरे सन् 1757 ई॰ के "पलासी युद्ध" के पश्चात् भारत के शासक बन बैठे। सन् 1765 ई॰ में इंगलैंड के सम्राट ने अंग्रेज संस्था ईस्ट इण्डिया कंम्पनी को बंगाल का राज्यकर वसूल करने का अधिकार दे दिया। इसके पश्चात् ईस्ट इण्डिया कम्पनी की क्षमता का प्रभाव न केवल पूर्व भारत में बल्कि सम्पूर्ण भारत में फैल गया। अंग्रेजी शासन के प्रभाव से भारतीय कला एवं संस्कृति पर काफी प्रभाव पड़ा। भारतीय कला एवं चित्रकला पर पश्चिमी रीति के प्रभाव से जिस नई कला शैली का जन्म हुआ, उसे **कम्पनी शैली** कहा जाता है। इस पाठ में उसका वर्णन किया गया है

18वीं शताब्दी के अंतिम चरण में भारत में रहने वाले यूरोपियों के लिए एक विशेष प्रकार की चित्रकला की रचना हुई। इन चित्रों का चित्रण भारतीय एवं विदेशी चित्रकारों के द्वारा होता था, जिनकी नियुक्ति मुख्य रूप से ईस्ट इण्डिया कंम्पनी ही करती थी। इस प्रकार की चित्रकला को **कम्पनी शैली** के नाम से जाना जाता हैं

मुगल तथा राजपूत चित्रकला की लगभग समाप्ति के पश्चात् कुछ चित्रकारों ने ईस्ट इण्डिया कंम्पनी के लिए चित्र बनाए, जिनमें रेलवे योजना तथा प्रकृति से संबंधित ऐतिहासिक सर्वेक्षण के चित्र आदि शामिल हैं। विदेशी भ्रमणकारियों ने इस तरह चित्रकला में रूचि दिखाई तथा इस तरह के चित्रों की भारी मांग भी होने लगी। इन चित्रों के लिए मुख्य रूप से जलरंगों का प्रयोग हुआ एवम् पश्चिमी रीति के अनुसार परिदृष्टि perspective एवं छाया प्रकाश का प्रयोग हुआ है। बंगाल के मुर्शीदाबाद शहर से कई चित्रकार बिहार के पटना शहर में चले गए। इस कारण यह शहर कम्पनी शैली की चित्रकला का केन्द्र स्थल बन गया। इस चित्र शैली से प्रभावित होकर तंजौर, तिरूचिरिपल्लि, दिल्ली, लखनऊ आदि स्थानों के चित्रकारों ने इस शैली में चित्र

रचना की। कम्पनी शैली का मुख्य योगदान मुखाकृति चित्रण में भी दिखाई देता है। इन मुखाकृतियों में मोटे रेखांकन के द्वारा चेहरे के तीखेपन को स्पष्ट किया गया है। छाया के लिए स्टिपलिंग तकनीक का प्रयोग किया गया।

11.1 उद्देश्यः–

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आपः–

- भारतीय चित्रकला पर उपनिवेशिक कला तथा संस्कृति के बारे में बता सकेंगे;
- इस काल की चित्रकला के रंगों के बारे में बता सकेंगे;
- कम्पनी शैली की चित्रकला की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे;
- दिऐ गए चित्रों की शैली, स्थान तथा माध्यम का उल्लेख कर सकेंगे;
- इन चित्रों का विस्तृत वर्णन कर सकेंगे।

कश्मीरी शिल्पकार

11.2 कश्मीरी शिल्पकार

शीर्षक	–	*कश्मीरी शिल्पकार*
माध्यम एवं साधन	–	*जल रंग, हाथ से बने कागज*
तकनीक	–	*टेंपरा*
रचनाकाल	–	*लगभग 18 वीं शताब्दी*
शैली	–	*कम्पनी शैली*
चित्रकार	–	*अज्ञात*
संग्रह	–	*राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली*

सामान्य परिचय

इस समय की चित्रकला के बहुत ही कम उदाहरण या नमूने प्राप्त हुए हैं। चित्रकारों के बारे में भी अधिक पता नहीं चला है। इन प्राप्त चित्रों में उल्लिखित चित्र कागज पर जलरंग द्वारा बनाए गए हैं। इस चित्र में आठ पुरूष, दो महिलाऐं तथा तीन बच्चों की आकृतियों का एक सुन्दर संयोजन है। चित्रित पुरूष कशमीरी कारीगर हैं जो शाल पर कढ़ाई कर रहे हैं और महिलाएँ इन कारीगरों की प्रसंशा कर रही हैं। कमरे का परिदृश्य (Perspective) पश्चिमी रीति के अनुसार बनाया गया है। पोशाकों में हल्के रंगों का प्रयोग हुआ है। चित्रकार ने पेंटिंग में कम छाया का प्रयोग किया है लेकिन मॉडलिंग स्टिप्लिंग माध्यम से बार–बार की गई है।

पाठगत प्रश्न (11.2)

सही उत्तर छाँट कर लिखें।

(क) इस चित्र का माध्यम है

(i) टेम्परा

(ii) तेल रंग

(iii) जल रंग।

(ख) इस चित्र के चित्रकार प्रेरित थे

(i) राजपूत लघुचित्र द्वारा

(ii) मुगल चित्रकला द्वारा

(iii) पश्चिमी चित्रकला द्वारा।

(ग) चित्रकार ने इस पेंटिंग में निम्नलिखित माध्यम का प्रयोग किया –

(i) स्टिप्लिंग

(ii) रेखा द्वारा छाया

(iii) समतल रंग।

पंछी

11.3 पंछी

शीर्षक	–	*बिना शीर्षक के*
माध्यम	–	*काली स्याही*
रचनाकाल	–	*लगभग 19वीं शताब्दी*
शैली	–	*कम्पनी शैली*
चित्रकार	–	*अज्ञात*
संग्रह	–	*राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली*

सामान्य परिचय

पंछी के इस सुन्दर चित्र को कजली स्याही तकनीक से बनाया गया है। इसमें पेंसिल द्वारा रेखांकन न करके, स्याही कलम या काली स्याही द्वारा सीधे कागज पर अंकित किया गया है। पंछी के चकित भाव को चित्रकार ने बहुत ही सुन्दर रूप में दर्शाया है। पंखों के बारीक अंकन को एक बहुत ही सुन्दर रूप में अलंकृत किया गया है। इन चित्रों के लिए नेपाल से कागज आयात होता था। परन्तु बाद में विदेशी कागज का प्रयोग होने लगा।

पाठगत प्रश्न (11.3)

रिक्त स्थानों को पूरा करें।

(क) पंछी के इस चित्र को ..... तकनीक से बनाया गया।

(ख) इन चित्रों के लिए ..... से कागज का आयात होता था।

(ग) इस चित्र को ..... शैली में बनाया गया है।

11.5 सारांश

मुगल तथा राजस्थानी लघु चित्र के पतन के पश्चात् अंग्रेजों की संरक्षता में कम्पनी शैली चित्रकला का विकास हुआ। पंछी व जानवर, पेड़–पौधों आदि के प्रति भारतीय कला–रसिकों की रूचि ने विदेशी कला–रसिकों को भी प्रभावित किया। अंग्रेजों ने भारत के शासक बनने के पश्चात् इस तरह की चित्रकला को संरक्षण दिया, जिसे कम्पनी चित्रकला या पटना स्कूल की चित्रकला के नाम से जाना गया। इन चित्रों के विकास के पीछे विदेशी रूचि के साथ–साथ विदेशी प्रभाव भी स्पष्ट है। निःसंदेह भारतीय चित्रकला तथा संस्कृति में भारतीय शैली के साथ यूरोपीय शैली के मिलन का यह उत्तम उदाहरण है।

11.6 पाठगत प्रश्नों के उत्तर

11.2. (क) जल रंग

(ख) पश्चिमी चित्रकला द्वारा

(ग) स्टिप्लिंग

11.3. (क) कजली स्याही

(ख) नेपाल

(ग) कम्पनी

11.7 मॉडल प्रश्न –

निम्नलिखित का संक्षिप्त वर्णन कीजिए–

1. कम्पनी स्कूल को पटना स्कूल के नाम से क्यों जाना जाता है ?
2. भारतीय चित्रकार विदेशियों द्वारा चित्र बनाने के लिये क्यों रखे गए ?
3. कम्पनी स्कूल की चित्रकलाओं की विषय वस्तु का वर्णन करो ?
4. कम्पनी स्कूल की विशेषताओं का वर्णन करो।